lkfgR; vkj lekt e ukjh dh fLFkfr

डॉ० कुसुम, सहा० प्रो०- हिन्दी,
राजकीय शिक्षा महाविद्यालय,
सेक्टर २०डी, चण्डीगढ़
E mail ID- Kusumhindi06@gmail.com

सारांश–

सदियों से गया इनको कुचला, अब तक नहीं ढेर हुई हैं ये।।
जितना इनको ललकारा है, उतनी ही दिलेर हुई हैं ये।।
जुल्म क्या न हुआ संग में इनके, रहीं जवर ने जेर हुई है ये।।
शोषण की चक्की में पिस–पिस, फौलादी घेर हुई हैं ये।। **(1)**

संसार की आधी आबादी नारी। अतीत से वर्तमान तक किन परिस्थितियों में अपने अस्तित्व को बचाए रखने में संघर्षरत है, उसकी करूण कहानी किसी से छिपी नहीं है। जहां तक भारतीय उप महाद्वीप का प्रश्न है। यहां तो विश्व के अन्य राष्ट्रों की अपेक्षा इसकी दशा को सर्वाधिक चिन्तित बनाने वाले यहां के पुरूष प्रधान समाज के द्वारा निर्मित की रूढ़ियां, अमान्य मान्यताएं, वंशानुगत, रीतिरिवाज, ढोंग परम्पराएं, पाखण्ड, अशिक्षा, अज्ञान के साथ–साथ समाज का पड्यंत्र पूर्ण असमानता से युक्त ताना बाना हैं। पुरूष समाज ने अपने हितों की रक्षा करने हेतु उसे दूसरे दर्जे का नागरिक बना दिया है। जिन अतीत के धार्मिक ग्रंथों में वर्णित विचारधारा को दृष्टिगत रखते हुए, इनके साथ व्यवहार किया जाता है। वह न केवल असमानता से परिपूर्ण हैं। वह निन्दनीय और अपमान जनक भी है। आज के समय में उसे किसी कोण से भी मानवता परिपूर्ण नहीं माना जा सकता। ये सारा एक सोची समझी कुटिल नीति की मानसिकता की उपज है। जिसके द्वारा धार्मिक एवं अन्य ग्रंथो के रचनाकारों ने अपनी रचनाओं के माध्यम से ऐसा विष भरा सृजन किया है, जोकि नारी को समाज की मुख्य धारा में जीने से अलग कर देता है। वे चाहे कवि, लेखक, अथवा किसी भी अन्य विधा के साहित्यकार क्यों न रहे हों। उनके द्वारा अपनी अतीत की धरोहरों को ही आगे बढ़ाने का प्रयास किया है। किसी ने अतीत से हटके, पुरातन मूल्यों से कटकर कुछ भी कहने का प्रयास आज तक नहीं किया है। वे हमेशा अतीत से सटकर चले हैं। जिससे वे कुछ नया पथ प्रदर्शन मार्ग दर्शन पूर्ण सृजन करने में असमर्थ रहे हैं। सबकी इच्छा प्रेय परिपूर्ण सृजन की रही है। सच को कहने से बचने का प्रयास सबने अपनी रचनाओं में किया है। चाहे वे काव्यों के रचयिता हों या महाकाव्यों के। वे हमेशा जोखिम से बचने का प्रयास करते रहे हैं। यथास्थितिवादी विचार के पोषक सारे साहित्यकार अतीत की जीर्ण शीर्ण नींब के ऊपर वर्तमान का सृजन भविष्य हेतु कर रहे हैं। वे लीक से हटकर आज के देश, काल और वातावरण की समस्यायों का विवेचन विश्लेषण और मीमान्सन कर ऑकलन, संकलन कर मूल्यांकन करने में अपने को असमर्थ पा रहे हैं। नारी के उत्थान, उन्नयन और उत्कर्ष की दिशा में नवीन धरातल को सृजित करने हेतु कोई पहल करने, आगे आने को तैयार नहीं दिखाई दे रहा है।

सारे सामाजिक मूल्यों, मानदण्ड़ों, नियमों, निर्देर्शों, रीतियों, नीतियों के निर्माता नियंत्रक, प्रचारक, विस्तारक, संस्थापक, सृजक, स्थापक और नियंत्रक सदा से पुरूष रहे हैं। अपने हित को सर्वोपरि मानते हुए उन्होंने ऐसे साहित्य का सृजन किया है। अपनी अनाधिकार पूर्ण शक्तियों का उनके द्वारा ने केवल प्रयोग किया उनका अपने हित में उपयोग भी इनके द्वारा किया गया है। नारी को लेकर इन सबकी विचारधारा हमेशा एक जैसी रही है। वे उसमें परिवर्धन हेतु परिवर्तन करने की स्थिति में न कभी थे और न आज हैं। वे गिरती मान्यताओं की दीवारों में थूनी लगाकर उसे रोकने का तो प्रयास कर रहे हैं। उसे उखाड़कर फेंकने को तैयार नहीं हैं। समानता आने पर उनकी श्रेष्ठता को संकट का सामना करना पड़ेगा। वे किसी कीमत पर भी अपनी श्रेष्ठता खोने को तैयार नहीं हैं। चाहे दूसरा इनकी दूषित भावना से पाताल में भले चला जाय। उसकी इनको

© 2016 Vidya Publications. **Authors are responsible for any plagiarism issues.**

लेशमात्र भी चिन्ता नहीं हैं। वे अपने आगे पीछे असमानता का जाल बिछाकर गुलामों की फौज एकत्र रखना चाहते हैं। दास, सेवक यदि नहीं रहेंगे, तब इनको सरकार, स्वामी, शासक मालिक कौन कहेगा? उनको कहने वाले चाहिए इस कारण वे ऐसा कहने वालों को अपने आगे पीछे बनाए रखना चाहते हैं।

;Fkk lekt rFkk lkfgR;& साहित्य कहीं आकाश से उतर कर धरती पर नहीं आता। समाज में रहने वालों के द्वारा ही इसका निर्माण होता है। वह देश, काल और वातावरण का कच्चा चिट्ठा प्रस्तुत करता है। उसमें घटने वाले विभिन्न धार्मिक, सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक घटनाक्रमों का वह जीवित आलेख होता है। उसमें अतीत की स्मृमियां, वर्तमान का घटनाक्रम और भविष्य की योजनाएं सम्मिलित होती हैं। सामाजिकता ही सृजक की मानसिकता उसके दृष्टिकोण का निर्माण करती हैं। यथास्थितिवादी उसमें परिवर्तन को स्वीकारने के पक्ष में किसी भी कीमत पर नहीं होते। परिवर्तन कामी विद्रोही अपने स्थानों से बचकर उसमें कुछ परिवर्तन करने की बात करते हैं, लेकिन उनकी बात नक्कार खाने में तूती की आवाज जैसी दब जाती है। वे संख्या में कम होते है, दूसरे उनसे कई गुना अधिक होते हैं। जो अपने यश को खोना नहीं चाहते। वे परिवर्तन कामी को ही खो देते है।

इस अध्ययन में हमारी पड़ताल नारी को मध्य में रखकर हमारे, वेदोंपुराणों, स्मृतियों, उपनिषदों, दर्शनों, ब्राहमण और ब्राहमणेत्तर ग्रथों, रामायण, महाभारत, गीता, आदिकाल, भक्तिकाल, रीतिकाल, वर्तमान काल के अनेकानेक रचनाकारों की रचनाओं की मनोदशाओं स्थापनाओं को उजागर करना हैं। उनके ऊपर प्रकाश डालकर उनके निष्कर्षो का आत्मालोचन कर, वर्तमान सन्दर्भों में उनके प्रसंगों की प्रासंगिकता को वर्तमान के साथ सम्पृक्त कर उसके उपयुक्तता अथवा अनुपयुक्ता को रेखांकित करना है। उनकी सार्थकता और निरर्थकता को नारी के सन्दर्भो में विवेचित, विश्लेषित और मीमांकित कर निष्कर्ष प्रस्तुत करना है।

iLrkouk

नारी की नम्रता को नापने का संसार के किसी भी कौने में आज तक कोई मानक नहीं बना। उसकी दया की गहराई को नापने के लिए संसार के महासागरों को खोदकर और गहरा करना होगा। उसकी सहन शीलता की ऊंचाई को नापने के लिए इस विस्तृत विशाल आकाश को थोड़ा और अपने को ऊंचा करना होगा उसकी ममता और मैत्री को नापने प्राणदायक वायु को कुछ और शीतल, मन्द, सुगन्ध को लेकर बहना होगा। उसके वलिदानों, त्यागों और तपस्यायों की तुलना अतुलनीय अपरिमेय है। सब कुछ सहमा और कुछ न कहना ऐसी प्रकृति संसार में किसी और जीव को समष्टि ने प्रदान नहीं की। अपने प्राणों का देकर जो प्राणों का सृजन करती हो। अपने रक्त और मज्जा से जो सृष्टि का निर्माण करती हो। चाहे वह किसी वर्ग की क्यों न हो, ऐसा कोई अन्य जीव नहीं कर सकता। वह अतुलनीय, अविवेचनीय, अनुपमेय और अलौकिकता से परिपूर्ण है। हमारे इतिहासकारो ने हमारे ग्रंथों काव्यों और महाकाव्यों के रचनाकारों ने उसके प्रति इतनी कुत्सित व्यवस्थाएं, नियंत्रण, सीमाएं, बन्धन, घेरे क्यों निर्धारित किए? उसका कोई सार्थक उत्तर देने को आज तक तैयार नहीं है। ऐसा होता रहा है। ये हो रहा है। इसे भविष्य में भी होना है। ऐसी सारे रूग्ण मानसिकता वाले लोगों के विचार हैं। आखिर ये भेदभाव, असमान व्यवहार, जीवन को जीने की मुख्यधारा से अलग रखने का पड्यंत्र, ये विभत्स यंत्रणाएं, अनाचार, दुराचार, दुर्व्यवहार, कदाचार, व्यभिचार क्यों हुआ? क्यों हो रहा है? ये आगे क्यों होगा? इसके होने के लिए और करने तथा करवाने का उत्तरदायी कौन है? हमें इन प्रश्नों पर आज ही विचार करना होगा। कल को कहते–कहते सदियां और युग वीत गए। होने के नाम पर जीवन के किसी क्षेत्र में भी आज तक शून्य के अतिरिक्त कुछ न हुआ। भारत का संविधान जो सबको समान अधिकार देने का पक्षधर है। उसकी मान्य मान्यताओं को सामाजिक पृष्ठभूमि में शठ शठ साल आजादी के बीतने के बाद भी

© 2016 Vidya Publications. Authors are responsible for any plagiarism issues.

क्रियान्वित, प्रतिस्थापित नहीं किया जा रहा है। प्राचीन मान्यताओं के पोषक समाज के शोषक धर्माधिकारी आज भी उसे समाज में फलने फूलने की स्थिति में नहीं आने दे रहे हैं। पीठाधीश, मठाधीश, धर्माधीश जो धर्म के नाम पर व्यापारिक गतिविधियों के संचालन में संलग्न और संलिप्त हैं। वे आज भी रूग्ण परम्पराओं को चरितार्थ करने से बाज नहीं आ रहे हैं। वे आज पुरानी जीर्ण अमान्य मान्यताओं और परम्पराओं के बल पर अपना स्वार्थ सिद्धकर रहे हैं। दूसरो को भ्रमित करके उनकी आँखों में धूल झोंक के, उन्हें भय दिखलाकर उनके मन में भ्रय भरके अपना उल्लू सीधा करने में रात–दिन निष्ठा के साथ अमर्यादित क्रिया कलापों का संचालन कर रहे हैं।

यदि कोई नारी आज भी मंच पर वेद पाठ करती है। तब वे तिलमिला जाते हैं। उनका पुरूषत्व चीखने–चिल्लाने, डोलने लगता है। वे इसे घोर विनाश का कारण कहते हैं। वे भारतीय संविधान से इतर अपनी सामाजिक श्रेष्ठता को सर्वोपरी रखकर प्राचीन ग्रंथों की सौगन्ध देकर उसे वेद पाठ करने से रोक देते हैं। वह नारी चाहे कितनी भी महान, विदूषी या प्रज्ञालब्ध क्यों न हो। वे खुले मंच पर उसका अनादर और अपमान करते हैं। धर्माधीश दुष्ट और दुर्जन लोग जगतगुरू की आज्ञाओं की अवज्ञा करने में अपने को असमर्थ पाते हैं। वे धर्म की बेड़ियों से जकड़े और हथकड़ियों से बंधे हैं। उन्हें अशुभ होने की आशंका है। उससे बड़ा अशुभ और क्या होगा जो एक धर्माधीश एक विद्वान श्रेष्ठतम महिला का अपमान करके कर चुके हैं। परम्पराओं में जकड़ा व्यक्ति वर्तमान से आंख बचाकर भविष्य में जीने का प्रयास करता है। जबकि भविष्य वर्तमान की नींव पर खड़ा होता है। उसे आज की चिन्ता नहीं होती जिसमें वह जी रहा है। जिसको वह जी रहा है। उसे हमेशा भविष्य की चिन्ता रहती है। जो है नहीं। जो अनिश्चित और अज्ञात है। वह अशुभ होगा इससे व्यथित है। जो अशुभ हो रहा है। उससे वह आंखे बन्द किए हुए है। जो विष वोया जा रहा है। उस पर उसका ध्यान नहीं है। क्योंकि वह तथाकथित समाज के ठेकेदार धर्माधिकारी द्वारा प्राचीन ग्रंथ का हवाला देकर "स्त्रियों और शूद्रों को वेद पढने का अधिकार नहीं है" इस सड़ी हुई मान्यता को पुनःस्थापित कर रहा है। उसकी मनोवृति इस देश के संविधान से भी ऊपर है, जिसके द्वारा उस देश की एक सौ पच्चीस करोड़ की आवादी संचालित होती है। जिसके पीछे भारत की सर्वोच्च सत्ता भारतीय संविधान, संसद तथा माननीय सर्वोच्च न्यायालय खड़ा है। लेकिन उसको इन सबसे परे अपनी श्रेष्ठता सिद्ध करनी है। इस कारण जो नितान्त अविवेकपूर्ण कृत्य हैं। वह उसको करता है। वह फूटी आंख भी एक महिला को वेद पाठ करते नहीं देखना चाहता। क्योंकि ऐसा घृणित, वर्जित, निन्दनीय, असमानता का पोषक धर्म कहता है। उसे संसद, संविधान, सर्वोच्च न्यायालय और समाज की कोई चिन्ता नहीं है। वह इनमें विश्वास ही नहीं करता। यदि करता तो उनकी व्यवस्थाओं, मान्यताओं की धज्जियां खुले आम न उड़ाता। वाद में अपनी हद से ज्यादा छीछा–लेदर संचार माध्यमों में देख, उसे भले ही कुछ शर्म आयी हो। इधर–उधर के बहाने बताए हों विवशताओं और वाध्यताओं की दुहाई दी हो। लेकिन एक महान महिला का अपमान तो इससे सम्मान में परिवर्तित नहीं हो सका। आप किसी की प्रफुल्लता, सम्मान, शान्ति और सौम्यता को छीनना ही अपना धर्म समझते हैं। तो ये कुचक्र अब अधिक समय तक चलने वाला नहीं है।

जो मान लेता है वह जान लेता है। संसार में इससे बढकर मिथ्या कोई दूसरा कथन नहीं हो सकता। यह इस कारण असत्य है कि मानने से कोई जानने की ओर नहीं बढ़ता, उसकी जिज्ञासा, शोध और चैतन्य की जीवन्तता मानकर समाप्त हो जाती है। जानों, समझों, सोचो, विचारो, सन्देह करो। आखिर वास्तविकता है क्या? ये ऐसा है तो है क्यों? ये वैसा भी तो हो सकता है। जो सन्देह करते थे। वे चांद पर पहुंच गए। जिन्होंने विश्वास किया। वे धरती पर रहने लायक भी नहीं बचे। तालाब बन गए। उनकी जानने, समझने की जिज्ञासा समाप्त हो गई। कल–कल, छल–छल अविराम सतत् बहाव की गति ठहर गयी। सड़ने लगे कहीं न पहुंच पाए। जहां थे। वहीं सूख गए। मिट गया नामो निशान। जिन्दगी वहने का नाम है। नित्य नयी खोज करने का नाम है। रहस्यों के पार जाकर सपनों को साकार करने की मनोदशा का नाम है। जो इससे विमुख

© 2016 Vidya Publications. Authors are responsible for any plagiarism issues.

या विरत हो गए। वह कहने को तो जीवित है। लेकिन उसमें जीवन रहा कहां? वह निर्जीव हो गए। जिस राष्ट्र की माताएं हेय, दीन, हीन समझी जाएंगी। उस राष्ट्र की संतति उसके पुत्र और पुत्रियां गौरवशाली भविष्य का निर्माण नहीं कर सकते। स्त्रियों में पीड़ा सहने की क्षमता पुरूषों से सीमा से ज्यादा अधिक होती है। उनकी आयु पुरूषों से अधिक होती है। जन्म के समय सौ स्त्रियों के साथ एक सौ दस पुरूषों को समष्टि पृथ्वी पर उतारती है। विवाह तक पहुंचते–पहुंचते ये एक सौ दस पुरूष सौ से भी कम हो जाते हैं। नव्वे प्रतिशत से अधिक पुरूष विवाह के पश्चात मृत्यु की यात्रा तक जाते–जाते स्त्री से पहले अपने जीवन से हाथ धो बैठते हैं। ये तब होता है जब स्त्री को संसार में न आने देने के भरसक प्रयास यथाशक्ति किए जाते हैं। फिर भी वह सारे प्रयासों को परास्त करती हुई। पुरूष की अपेक्षा ज्यादा संख्या में जीवित रहती है। ज्यादा समय भी उसका जीवन इस जमीन की शोभा बढ़ाता है।

fo'k;oLrq&

भारतीय धार्मिकता के ठेकेदार समस्त सामाजिक ताने बाने को उसमें व्यास समस्त समस्यायों को वेद सम्मत या वेद विरूद्ध मानकर उनका विरोध अथवा अनुमोदन करते हैं। भले ही उन्होंने वेदों को पढ़ना तो दूर उन्हें देखा भी हो या न हो। समाज में कोई उथल–पुथल, समस्या या संकट उत्पन्न हो वे अपने धार्मिक ग्रंथों के सिर मौर को परोसने में किंचित मात्र भी विलम्ब नहीं करते। चूंकि वेद आम आदमी की पहुंच से परे रहे हैं। तथाकथित स्वनाम धन्य धार्मिकों ने उनको अपनी व्यक्तिगत सम्पत्ति मान रखा है। इस कारण जब वेद को बीच में रखा जाता है। तो आम आदमी अपने तर्को की धर को मीठी कर लेता है। भले ही जो वेद को बीच में रख रहा है। उसने वेदों को जाना भी न हों। इनको भारतीय समाज का आदि पथ प्रदर्शक नियामक और नियंता माना जाता है। इनको विश्व प्रसिद्ध प्राचीन ग्रंथ माना जाता है। इनमें नारी के सघन अपमान तिरस्कार और अमानवीयता का जितना नंगा नाच है। शायद इनके परवर्ती ग्रंथों में, अन्य किसी में नहीं है। जो जहर नारी को लेकर इनमें उगला गया है। उतना किसी अन्य पुस्तक में नहीं उगला गया। उनके द्वारा की गयी छीछालेदर का ही ये परिणाम है कि नारी आज तक समाज की मुख्यधारा से अलग–थलग समझी जाती है। सतीप्रथा, दासीप्रथा, नियोग, देहज प्रथा, वलिप्रथा इत्यादि का वर्णन वेदों में मिलता है। जो नारी जाति ही नहीं मानवीयता के माथे पर कुटिल कंलक है। इनके प्रचार प्रसार से कामी, क्रोधी, लालची, धूर्त, और क्रूर लोगों ने नारी की इज्जत से जी भर के खेला है। उसे अपने हाथों का खिलौना और वासना का शिकार बनाया है। वेदों में अध्ययन से ज्ञात होता है। लड़की पिता की अनिच्छित संतान होती हैं। ये उससे किसी भी कीमत पर पुत्र प्राप्ति की इच्छा ही करते है। उसके विपरीत यदि कन्या का जन्म होता है। तब इनकी व्यवस्थानुसार शोक मनाया जाता है। लड़की पैदा होने पर हाय और लड़का पैदा होने पर आहाकर खुशियां मनाई जाती हैं।

ofnd lkfgR; esa ukjh dh fLFkfr&

ऋग्वेद के (10.84.85) की रिचाओं में ऐसा वर्णन मिलता है। जब नव विवाहिता दुल्हन को दस पुत्रों को पैदा करने का आशीर्वाद दिया जाता है। एक ओर पुत्री के उत्पन्न होने पर शोक, दूसरी ओर उसी पुत्री के विवाह हो जाने की स्थिति में उससे दस पुत्रों की अपेक्षा करना कितना हास्यास्पद हो सकता है। वेदों में पुत्रोत्पत्ति के लिए एक संस्कार विशेष की व्यवस्था की गयी है। जिसको पुंसवन संस्कार के नाम से जाना जाता है। यथा–

प्रजापतिरनुमतिः सिनीवाल्य चीक्लृपत।।
स्त्रैषूयमन्यत्र दधत्पुमांसमु दधदिह।। **(2)**

अर्थात–

© 2016 Vidya Publications. **Authors are responsible for any plagiarism issues.**

हे प्रजापति, अनुमति और सिनावाली तुम्ही ने इस गर्भ को बनाया है। स्त्री का जन्म कहीं और हो। पर इस गर्भ से पुत्र उत्पन्न हो। प्रार्थना करने वालो को यह ध्यान शायद नहीं रहा। जो जन्म देने वाली गर्भ धारण करने वाली है। वह स्त्री हैं। फिर स्त्री से स्त्री का विरोध कितनी सार्थक प्रार्थना है। ये जो एक स्वागत और दूसरे का विरोध करती है।

पिंग रक्ष जाय मानम् मा पुमासं स्त्रियं क्रन। **(3)**

अर्थात–

हे पति उत्पन्न होने वाले पुत्र की रक्षा करो। उसे स्त्री न बनाओ। स्त्री की ये कामना है। उससे उत्पन्न होने वाली सन्तान पुरूष ही हो वह स्त्री न हा। यजुर्वेद की व्याख्या शतपथ ब्राहमण (5–3–2–2) में पुत्र हीन स्त्री को भला बुरा कहते हुए उसे अभागिन तक कह दिया है। इसी प्रकार ऋग्वेद में नारी निन्दा की गयी है।

इंद्रश्चिदा तद्ब्रवीत स्त्रियां अशास्यम् मनः उतो अहं क्रतु रघुम्।। **(4)**

अर्थात–

इन्द्र ने स्वयं कहा है कि स्त्री के मन को शिक्षित नहीं किया जा सकता उसकी बुद्धि तुच्छ होती है। ये देवराज इन्द्र का कथन है। फिर स्त्री विषयक अन्य की विचार धारा क्या होगी? निश्चित इन्द्र से बढ़कर उससे और अधिक घृणित ही होगी।

न वै स्त्रैणानि सख्यानि सन्ति। साला वृकाणो हृदयान्येता।। **(5)**

अर्थात–

स्त्रियों के साथ मैत्री नहीं हो सकती। इनके दिल लक्कड़ बग्घो के दिलों से भी क्रूर होते हैं। कितना जहर भरा है। नारी के प्रति वेद वाणी में। उसके दिल को जंगली जानवरों के दिल से भी अधिक क्रूर वर्णित किया है। यजुर्वेद तैतीरीय संहिता का कहना है कि स्त्रियां बिना शक्ति की हैं। इन्हें सम्पत्ति में भाग नहीं मिलता। वे दुष्ट से भी अधिकाधिक दुर्बल ठंग से बोलती हैं।–

तस्मात्स्त्रियों निरिन्द्रिया अदायारयि।। पापात्पुंस उपस्तितंर वदन्ति।। **(6)**

यजुर्वेद व्याख्या शतपथ ब्राहमण के अनुसार स्त्री, शूद्र कौए एवं कुत्ते में असत्य, पाप एवं अन्धकार विराजमान रहता है। (14–1–1–31) में इस तरह का वर्णन मिलता है। पति के मर जाने के बद महिलाओं के बाल काट दिए जाते थे। उनको किसी भी उत्सव मं जाने या मंगलमय कार्यों में सम्मिलित होने की अनुमति नहीं थी। उसे वेजुवान पशु समझा जाता था। उसके साथ पशुओं जैसा ही व्यवहार होता था।

ऋग्वेद में दासियों का भी वर्णन है। उनको उपहार स्वरूप दान में और उपहार में भेंट स्वरूप दिया जाता था। "राजा लोग अपने पुरोहितों और परिजनों को दासियों से भरे रथों के रथ दान में देते थे।" **(7)** ये स्त्रियां वे हुआ करती थी जिनके पुरूषों अथवा पुत्रों को या तो परास्त कर दिया जाता था। अथवा उनकी हत्याकर दी जाती थी। इनको दूसरे लोगो को दे दिया जाता था। कुछ को नगर वधु के रूप में रखा जाता था। जिनके साथ जो जेसा चाहता था वैसा व्यवहार कर सकता था। वे सार्वजनिक सम्पत्ति हुआ करतीं थीं।

ऋग्वेद में नियोग का साफ वर्णन है। जब एक स्त्री को पुत्र उत्पत्ति की कामना से पर पुरूष के पास बल पूर्वक उसकी इच्छा के विपरीत भेजा दिया जाता था। बहुत से राज परिवार अपना वंश चलाने की इच्छा से खुशी–खुशी इस कार्य को करते और करवाते थे। वेद स्त्री समाज के प्रति क्रूर और हिंसक हैं। वे स्त्री को मन वहलाव की वस्तु मानते हैं। उनका स्वतंत्र अस्तित्व स्वीकारने में वे कतराते हैं। उनमें हिंसा का उपदेश हैं। सतीप्रथा को बढावा है। नियोगा जैसी स्वच्छन्दाचारी

© 2016 Vidya Publications. **Authors are responsible for any plagiarism issues.**

प्रथा का आदेश है। दहेज की प्रथा की स्वीकृति है। दासी प्रथा को स्वीकारा गया है। इसमें बलिप्रथा है। नारी जाति का जिस प्रथा से अधिकाधिक शोषण, उत्पीड़न हो सकता है। वे सारी प्रथाएं इसमें स्थान रखती हैं।

'एक क्रान्ति नारी के व्यक्तिव में उपस्थित हो। अगर यह क्रान्ति उपस्थित नहीं होती हैं, तो नारी को जो अनुदान देना चाहिए मुनष्य की सभ्यता के लिए, वह नहीं दे पाती है। नारी के जीवन में जो प्रफुल्लता शान्ति और आनन्द होना चाहिए, वह उसे उपलब्ध नहीं हो पाता। नारी का आनन्द बहुत अर्थ पूर्ण है, क्योंकि वह घर का केन्द्र है। अगर घर का केन्द्र उदास, दीन–हीन, थका हुआ, हारा हुआ है। तो सारा घर सारा परिवार, जो उसकी परिधी में घूमता है। वह सब दीन–हीन, उदास और हारा हुआ हो जाएगा। **(8)**

ikjkf.kd lkfgR; vkj ukjh&

धार्मिकों ने धर्म के नाम पर नारी को दवाए रखने के लिए, क्या–क्या प्रपंच न किए, उनमें सती कराना सर्वाधिक कुटिल और क्रूर अमानवीय प्रपंच था। शास्त्रों का निर्माण पुरूषों ने किया। उनको किसी कीमत पर भी अपनी प्रभू सत्ता बनाए रखनी थी। उसको बचाये रखने में किसे कितनी पीड़ा होती है। उससे उनका कोई मतलब नहीं। कितनी जीवित जानें इसमें चली जायेंगी उनका इससे कोई लेना देना नहीं। लाखों दुखिता नारियों को उनके न चाहने पर भी बलपूर्वक उनके पति के साथ आग में जला दिया। किसी ने उसमें कुछ आपत्ति की तो सारे धर्माधिकारी दूसरे लोगों को साथ लेकर उसके विरोध में खड़े हो गए। यदि वह अपनी इच्छा से नहीं मरती है, तब सार्वजनिक रूप से उसकी हत्या की जाती। यदि किसी की मृत्यु हो जाती तो एक पखवाड़े उसके घर गरूण पुराण का पाठ चलता। गरूण पुराण के अध्याय दस में इस हत्या करने की व्यवस्थाओं का स्पष्ट वर्णन है। उसकी हत्या किस विधि विधान से की जाय उसकी पूरी व्यवस्था इस अध्याय में की गयी है। "नारी अपने को सुहागिन की तरह सजाए, ब्राहमणों को दान दे और गुरू को नमस्कार करके घर से चले। देव मंदिर में जाकर भक्ति से प्रणाम करे। सारे आभूषण मंदिर में चढा दे। वहां से बिल्व का फल लेकर लज्जा और मोह का त्याग कर श्मशान में चल पड़े। वहां सूर्य का नमस्कार कर चिता की परिक्रमा करें। तत्पश्चात चिता पर बैठ पति का सिर अपनी गोद में रख ले। फिर विल्व का फल सहेलियों को देकर उनसे आग लगाने को कहे। उस आग में अपने को इस तरह जला दे। मानो मा गंगा के जल में शीतल डुबकी लगा रहीं हौ।" **(9)** धर्मभीरू धार्मिकों को एक मरते हुए व्यक्ति से भी आभूषण वस्त्र धन आदि चाहिए। पहले तो उसे मारो और उस मरतें हुए से मारने की मराई भी लो। ऐसा करने की हिम्मत किसी पुरूष के साथ उनकी नहीं थी। असंख्य महिलाएं असंख्य पुरूषों के साथ जला दी गईं, लेकिन किसी एक पुरूष को भी किसी एक महिला के मरने पर न तो जलने की सूझी और न उसे जलाने का प्रयास ही किया गया। सारी मूर्खताएं नियम, निर्देश, प्रतिबन्ध केवल महिलाओं के लिए ही थे। गरूण पुराण में व्यवस्था दी गयी है। "जब औरत पति की लाश के साथ आग में बैठती है। तब अंगों को जलन महसूस नहीं होती। उस आग में तो केवल पाप जलते हैं। जैसे वरतन को आग में रखने से उसके ऊपर जमी केवल मैल जलती है। जो नारी सती (सच्ची) होती है। वह मृत पति के साथ तादात्म्य स्थापित कर लेती है। इस तरह पति के साथ होने पर वह जलती नहीं।" **(10)** एक ओर नारी को जलने निवश किया जाता है। दूसरी ओर ऐसा न करने की स्थिति में उसको डराया–धमकाया जाता है। यदि वह पति के शव के साथ सती नहीं होती है तो असंख्या जन्मों तक उसे बार–बार नारी के रूप में ही इस धरती पर जन्म लेगी। साथ जलने के कारण ही वह अनेक जन्मों तक अपने पति के ही साथ जीवित रहेगी। ये थे प्रलोभन, धमकियां और भय। पारलौकिकता का भय दिखाकर एक जीवित नारी को जलने के लिए बाध्य किया जाना पुराणों का परमोद्देश्य रहा है। "एक बार में ही छुटकारा पाने के लिए उसे मृत पति के साथ सती हो जाना चाहिए। इससे न केवल उसे छुटकारा मिलेगा। बल्कि वह स्वर्ग में पत्नि अंरूधती के समान पूजा की पात्र भी बनेगी। वहां अप्सराएं

© 2016 Vidya Publications. Authors are responsible for any plagiarism issues.

उसकी स्तुति करेंगी। अपने पति के साथ वह चौदह इंद्रों की उम्र तक आनन्द मनाएगी। सूर्य के समान चमकने वाले विमान में आनन्द करेगी। जब तक सूर्य चांद विद्वमान हैं। पति लोक में निवास करेगी। इतना ही नहीं वाद में उसका जन्म बहुत अच्छे कुल में होगा" **(11)**

Lefrdkyhu lkfgR; vkj ukjh&

स्मृति काल भी नारी के लिए उपेक्षा से भरा था। उसको धार्मिकों की अंगुलियों पर नाचना होता था। स्त्री का कोई स्वतंत्र अस्तित्व नहीं होता था। वह सबकी सम्पत्ति होती थी। उसकी सम्पत्ति उसका पक्षघर, न्याय की बात करने वाला कोई एक भी नहीं होता था। पुरोहितों का एकाकी साम्राज्य था। जो अपने हित साधने के लिए किसी की भी जान ले सकते थे। उनके नियमों और निर्देशों के आगे बड़े–बड़े साम्राज्यों के अधिपति अपना सिर झुका लिया करते थे। उनकी व्यवस्था हमेशा ही नारी की विरोधी होती थी। उसके मरने या उसके मार देने में ही उनका हित सुरक्षित था। जीते जी उनको कुछ नहीं मिलता था। मरने पर आभूषण, वस्त्र धन आदि उनको प्राप्त होता था।

व्याल ग्राही यथा व्यालम् बलादुद्धरते विलांत्।। एवं स्त्री पतिमुद्घृत्यतेनैव सह मोदते।।
तावत कालम वसेत स्वर्गे भर्तारं याडनुगच्छति।। तिस्त्रः कोद्योर्ध्दकोटी च यानि लोमानी मानवे।। **(12)**

अर्थात–

जो स्त्री पति के साथ अनुशरण करती है। उसकी चिता पर जल मरती है। वह साड़े तीन करोड़ वर्षों तक, जितने कि मनुष्य के शरीर पर रोम होते हैं। स्वर्ग में निवास करती है। जैसे सपेरा सांप को बिल से निकाल लेता है। वैसे ही वह नर्क से अपने पति को खींच लाती है। जो उसके साथ जलती वह स्वर्ग में उसके साथ आनन्द मनाती है। इन आडम्वरियों, पाखण्डियों, मिथ्याचारियों के इतने बड़े झूठ (साड़े तीन) करोड वर्ष तक जीने की बात) करते हुए न तो आकाश जमीन पर गिरा और न धरती ही फटी। कितना सीमा से अधिक उकसाना। कितना सर्वोच्च प्रंलोभन देना। जिसका उनको स्वयं पता नहीं उसको होने की गारन्टी देना। एक ओर कितनी बड़ी बकवासं है।

मृते म्रियेत या पत्यौ सस्त्री ज्ञेया पतिव्रता।।
या स्त्री मृतं परिष्वज्य दग्धा चेंद हव्यवाहने।। **(13)**

अर्थात–

पति के साथ मरने वाली स्त्री को ही पतिव्रता समझना चाहिए। जो स्त्री मृत पति का आलिंगन कर के अग्नि में प्रवेश करती है। वह पति लोक को प्राप्त होती है। ऐसा प्रतीत होता है। जैसे स्मृतिकारो को स्वर्ग की सारी व्यवस्थाओं का सारा पता हो। वे अपनी बात को बड़े दावे के साथ घोषित करते हैं। ऐसा होगा तो ऐसा होगा। वैसा होगा तो वैसा होगा। वे अपने दिव्यचक्षुओं से सारा कुछ आर पार देख रहे हों।

अयं च सर्वासां स्त्रीणाम गर्भिणीनाम वाला पत्यानामाचां डालं साधारणो धर्मः।।
भर्तारं यानुगच्छनीत्यविशेषोपादानात।। **(14)**

अर्थात–

मिता क्षराकार ने यह भी फतवा दिया। पति के शव के साथ जल मरना वैदिक व्यवस्थाओं के अनुरूप है। सहमरण के द्वारा स्त्री स्वर्ग को प्राप्त करती है। यह वेदों के पूर्णतया अनुकूल है। इसका पालन अवश्य करना चाहिए। किसी भी कीमत पर सारे नियमों का उदाहरण और प्रलोभन देकर उसको जलाना ही परमोद्देश्य था। नारी के स्वतंत्र अस्तित्व को नकारने वाले ये धार्मिक ग्रंथ कितने अधार्मिक हो सकते है। इसका अनुमान लगाना भी संभव प्रतीत नहीं होता । एक व्यक्ति चाहे वह कितनी भी सवल अथवा दुर्वल हो वह तो संसार से गया ही अपना पूरा समय बिता कर, व्यवस्थाओं और धार्मिक मान्यताओं

© 2016 Vidya Publications. **Authors are responsible for any plagiarism issues.**

की दुहाई देकर दूसरे व्यक्ति को आप केवल उसके साथ भेजने को इस लिए व्याकुल हैं क्योंकि वह नारी है। उसको वलात जलाने का। उसके सम्बन्धी पारिवारिक जन केवल इसलिए आगे आकर विरोध नहीं कर रहे हैं। वे धार्मिक नियमों से बंधे हैं। कितनी अधार्मिक है यह धार्मिकता जो केवल स्त्रियों की हत्या करती है।

"स्त्री को घोषणा करनी चाहिए कि हमारी भूमि अलग है। स्त्री को अहसास होना चाहिए कि उसके कोई पास जीवन का और बड़ा मिशन है, कोई और बड़ा सन्देश है। जीवन को आनन्द देने की कोई और बड़ी क्षमता है" **(15)**

mifu"knh; lkfgR; e ukjh dh fLFkfr

नारी के सम्बन्ध में उपनिषद भी दूध के घुले नहीं है। उनकी विचार धारा भी अपने पूर्व वर्ति रचनाकारों की मानसिकता से मेल खाती है। जो सताया हुआ है उसे और सताओं दुखी के दिल को ओर दुखाओं। नारी को लेकर तो इन सबने न जाने कितना अधिक कड़वा खाया है। सबसे पहले उसी को वलि का बकरा बनाकर उसकी भेंट उनको चढानी है। समाज में सबसे कमजोर किसी की गरदन है तो नारी की है। ऐसी इन तथा कथित धार्मिको की मानसिकता हमेशा से नारी के प्रति रही है।

सा चेदस्मै न दद्यात्काममेनाम वक्रणीयात् सा चेदस्मै नैव दद्यात्काममेनां।
यष्ट्या वा पाणिना वो पहत्याति क्रामेदे द्रियेण ते यशसा यश आद्द यत्ययशा एवं भवति।। **(16)**

अर्थात–

नारी यदि पुरूष को कामेच्छा की पूर्ति न करे तो उसको हाथों से अथवा लाठी से पीटें। उसे धमकाते और डराते हुए कहें कि मैं तुझे वदनाम कर दूंगा तेरा अपयश फैला दूंगा। ऐसे अनेक दृष्टटान्त दृष्टि में आए हैं। जिनसे स्पष्ट होता है कि उपनिषदों के अनेक ब्रहमवादी शोशण की दृष्टि से कइ–कई स्त्रियों को पत्नि के रूप में अपने साथ रखते थे।

अथह याज्ञवल्क्यस्य द्वे भार्ये वभूवतु।।
मैत्रेीम कात्ययानी च।। **(17)**

अर्थात–

याज्ञवल्क्य जैसे ब्रह्म वेत्ता की भी दो पत्नियां थी। जिनमें एक का नाम मैत्रेयी था। दूसरी का नाम कात्यानी था। उपनिषद काल में भी स्त्री को सम्पत्ति के रूप में माना जाता था। एक के पास एक से अधिक पत्नियों के रखने के अनेक प्रंसग देखे जा सकते हैं। छान्दोग्य उपनिषद में इस तरह का वर्णन आता है। स्त्री चल सम्पत्ति है। वह मूक पशु की भांति उपहार रूप में किसी को दान दी जा सकती है। ब्रहमज्ञान देने के लिए राजी करने के लिए रैक्व को जनश्रुति ने रूपये पैसे के साथ–साथ अपनी बेटी को भी उपहार स्वरूप भेंट किया था। उपनिषदों को ज्ञान का स्रोत बताना अति आश्चर्यजनक है। कठोपनिषद का मुख्य पात्र नचिकेता मृत्यु के देवता यमराज से ब्रहम विद्या सीखकर आता है। उसे बताया जाता है कि संसार ब्रहम के आधीन चल रहा है। जो इस रहस्य को जान लेता है वह मुक्त हो जाता है।

jkek;.k dky e ukjh dh fLFkfr&

रामायण की कथा को आधार मानकर, उसके पश्चात भारत के अलग–अलग क्षेत्रों में अलग–अलग भाषा में अनेक रामायणें इस देश में अस्तित्व में आयी। इस पटकथा को प्रत्येक रचनाकार ने अपने दृष्टिकोण से देखा और उसमें अपनी सृजन शीलता को जोड़ दिया। इतना निःसन्देह स्पष्ट है कि रामायण काल में भी महिलाओं के साथ कोई सम्मानजनक व्यवहार नहीं होता था। उस काल में नियोग प्रथा एक आम बात थी। राजा दशरथ के चारों पुत्र नियोग की ही देन थे। किसी परपुरूष को अपनी नारी को सौंप देना कोई बुरी बात न थी। ये आज के शब्दों में खुला व्यभिचार था। दशरथ की तीनो पत्नियों से जो चार पुत्र दशरथ का वंश चलाने आए, जो रामायण के मुख्य और गौड़ पात्र हैं। वे दशरथ की सन्तान नहीं थे।

© 2016 Vidya Publications. **Authors are responsible for any plagiarism issues.**

क्योंकि राजा दशरथ विदेह थे। वे सन्तान उत्पन्न करने में सर्वथा असमर्थ थे। खीर तो बच्चा उत्पन्न नहीं करा सकती, खीर की आड में नियोग करा के राजा दशरथ ने सन्तानें प्राप्त की। स्त्रियों के साथ उस समय खुला व्यभिचार होता था। जब एक राजा अपनी आंखों के नीचे ये होता देख सकता है तो आम जनता का क्या हाल होगा? इसका सहज अनुमान लगाया जा सकता है। वाल्मीकि रामायण इन तथ्यों को अनदेखा नहीं करती। जिन परम्पराओं रीति रिवाजों को वेद, स्मृतियां, उपनिषद इत्यादि पूर्ववर्ती ग्रंथों ने पाला पोसा हो उनका पूरी निष्ठा और दृढता के साथ बाल्मीकि रामायण में भी पालन किया गया। सामाजिक सम्पूर्ण पृष्ठभूमि नारी को लेकर अनुदार रहीं है। रामायण भी उस अनुदारता से अलग नहीं है। दशरथ की मृत्यु के प्श्चात कौशल्या कहती है।

इदम शरीरम् आलिंग्य प्रवेक्ष्यामि हुताशनम **(18)**

अर्थात–

मैं महाराज के शरीर का आंलिगन कर अग्नि में प्रवेश करूंगी। यह उस समय की आम कुत्सित परम्परा थी। पति की मृत्यु के पश्चात उसकी पत्नि को अपने को आग के हबाले करना ही होता था। सामाजिक भय इतना अधिक मजबूत था। जो न चाहे उसको भी जलना पड़ता ही था। इस लिए अपने सीने पर पत्थर रखकर स्त्री स्वतः जलने को तैयार हो जाती थी। ये बात अलग है कि कौशल्या को सती होने से रोक दिया गया था। सीता को रावण जब माया निर्मित राम का कटा हुआ सिर दिखलाता है। उस समय सीता कहती है–

रावणानुगमिष्यायि गतिं भतुर्महात्मनः**(19)**

अर्थात–

हे रावण मैं अपने पति के साथ सती होउंगी। वाल्मीकि रामाण के उत्तर कांड में भी सती होने का उल्लेख वर्णित है। राजर्षि कुशध्वज को जब शुंभनामक दैत्य ने मार डाला तब कुशध्वज की पत्नी ने पति के शव का आलिंगन कर अपने को आग में जला डाला अर्थात वह सती हो गयी। कुशध्वज की पुत्री देववती इस तथ्य को उजागर करते हुए कहती है–

ततोमे जननी दीना तच्छरीरम् पितुर्मम।।
परिष्वज्य महाभागा प्रविष्टा हव्य वाहनम।। **(20)**

अर्थात–

तब मेरी माता मेरे पिता के शरीर का आलिंगन कर अग्नि में प्रविष्ट हो गयी। इन दृष्टान्तों से स्पष्ट हो जाता है कि रामायण काल में सती प्रथा का बोल वाला था। यह अनार्यो की तुलना में आर्यों में ज्यादा गहरी पेंठ बनाए हुए थी। रामायण को लेकर परवर्ती काल में भी जो रचनाएं इस कथा वस्तु को आधार बनाकर अस्तित्व में आयीं उनमें भी इस रहस्य को साफ–साफ वर्णित किया गया। तुलसी बाल्मीकि से भी चार कदम आगे चल कर अपनी बात करते है। जो नारी अपने पति को प्रेम नहीं करती वह अगले जन्म में विधवा हो जाती है– अर्थात वैघव्य पूर्व जन्म के कुकृत्यों का फल होता है।

पति प्रतिकूल जन्मि जहं जाई।। विधवा होय पाइ तरूणाई।। **(21)**

अर्थात–

ऐसी पूर्वजन्म की पापिन को कौन धर्मात्मा जीने देगा। जीने भी देगा तो कौन मानवीय व्यवहार करेगा। क्योंकि अपने पूर्व जन्म के पापों के कारण वह तो अपने पति को खा गई है।–

"नारी का अपना कोई असितत्व नहीं है। उसे अगर अस्तित्व की घोषणा करनी हो तो उसे कहना चाहिए कि मैं मैं हूँ– किसी की मां नहीं, माँ होना गौड़ है। किसी की पत्नी नहीं, पत्नि होना गौड़ है। किसी की बहन नहीं, बहन होना गौड़ है। वह मेरा अस्तित्व नहीं है। मैं मैं हूँ। मेरे अनेक सम्बन्धों में से एक सम्बन्ध है। रिलेशनशिप है, वह मैं नहीं हूँ। यह स्पष्ट

© 2016 Vidya Publications. **Authors are responsible for any plagiarism issues.**

भाव आने वाली पीढ़ी को, एक–एक लड़की में, एक–एक युवती में, एक–एक नारी में होना चाहिए– मेरा भी अपना अस्तित्व है।" **(22)**

egkHkkjr dkyhu lkfgR; e ukjh dh fLFkfr&

महाभारत के अध्ययन से स्पष्ट होता है कि इस समय स्त्रियों के साथ क्रूरतम व्यवहार होता था। उनको पुरूष की सम्पत्ति मान कर व्यवहार किया जाता था। उनका अपना कोई स्वतंत्र अस्तित्व नहीं था। वे एक वस्तु की भांति समझी जाती थीं। इसमें बहुपति प्रथा प्रचलित थी। एक महिला कई पतिओं की पत्नी रह सकती थी। जैसे द्रोपदी के पांचो पाण्डव पति थे। नियोग की प्रथा प्रचलित थी। पांचों पाण्डव पाण्डु अपने पिता की सन्तान न होकर नियोग से उत्पन्न सन्तान थे। उनके कुल में उनसे पूर्व भी नियोग का प्रचलन था। स्त्री का भरी सभा में अपमान किया जा सकता था। उसको नंगा करने का प्रयास भारी सभा में खुले आम सारे दरवार में किया जा सकता था। उसको केश पकड़कर खींचा जा सकता था। इतना ही नहीं उसको नितान्त व्यक्तिगत सम्पत्ति मानकर तास के पत्तों पर रखकर जीता या हारा जा सकता था। जैसा युधिष्ठिर ने किया। दुर्थोधन ने द्रोपदी के वाल पकड़कर खींचा और बीच सभा में नंगा करने का प्रयास किया। जिन बीजों को वेदो ने बोया, जिन परम्पराओं को प्रचारित और प्रसारित किया वाद के सभी साहित्यों के साहित्यकारों ने पूरी निष्ठा के साथ उसको क्रियान्वित किया। दान, दहेज, नियोग, दास बनाना, सती हो जाना इत्यादि सारी वैदिक परम्पराएं महाभारत काल में भी थी। पांडू की चूंकि दो पत्नियां थी। कुन्ती ओर माद्री दोनों से नियोग के द्वारा पांच सन्तानों की प्राप्ति पांडू को हुई। इससे स्पष्ट होता है। उस समय एक तरफ बहुपत्नी दूसरी तरफ बहुपति की प्रथा अस्तित्व में थी। बिना वर्ग, वर्ण, जाति, सम्प्रदाय की चिन्ता किए कोई भी राजा किसी की भी कन्या को कितनी भी अधिक आयु होने पर अपनी पत्नी के रूप में स्वीकार कर सकता था। सामाजिकता नैतिकता से परिपूर्ण नहीं थी। महाभारत काल में स्त्रियों के प्रति यह काल भी शोभनीय नहीं था। घृतराष्ट्र, पाण्डु और विदुर का जन्म भी नियोग से ही हुआ। ब्राहमणों को नियोग करने हेतु सर्वाधिक उपयुक्त माना जाता था। उन्हें इस कार्य से, धन, आभूषण, वस्त्र इत्यादि की प्राप्ति होती थी। विचित्रवीर्य के मरने पर सत्यवती ने भीष्म से कहा कि नियोग द्वारा भाई की पत्नी से सन्तान उत्पन्न करा– भीष्म ने उत्तर दिया–

पुनर्भरतूवंशस्य हुतं सन्तान वृद्धये, वक्ष्यामि नियतं मात स्तन में निगदतः श्रृणु।
ब्राह्ममण्डो गुणवान कश्चिद धनेनोप निभंयताम्चित्रिवीर्य क्षेत्रेपुयः समुत्याद्येत प्रजाः।। **(23)**

अर्थात–

हे माता, भरतवंश की सन्तान परम्परा को बढ़ाने और सुरक्षित रखने के लिए जो नियम उपाय हैं उसे मैं बताता हूँ। किसी गुणवान ब्राहमण को धन देकर बुलाओं जो विचित्रवीर्य की स्त्रियों से सन्तान उत्पन्न करें। ये नियोग की खुली छूट का सच्चा उदाहरण हैं

द्वितीयं कुरूवंशस्य राजानं दातुर्महसि, सः तथेति प्रतिज्ञाप निश्चय क्राम महायशाः **(24)**

अर्थात–

दूसरी बार नियोग करके जब व्यासजी निकले तो सत्यवती ने होने वाले बच्चे के विषय में पूछा–व्यास जी ने उसे पाण्डुरंग का बताया, तो माता ने एक और बच्चे के लिए कहा तो व्यासजी मान गए। यह नियोग की परम्परा स्पष्ट होती है। इसके अतिरिक्त जहां तक सती हो जाने की बात है। आदि पर्व के 125/19 में वर्णन आया है कि पाण्डु की मृत्यु के पश्चात उनकी पत्नी माद्री को उनके साथ जलाया गया था। कृष्ण के पिता वासुदेव की चारो पत्नियां देवी, भद्रा, रोहिणी और मंदिरा अपने पति के साथ जलाई गयी थी (मौसल पर्व 7/18)। कृष्ण की पांच पत्नियां–रूक्मिणी, गान्धारी, शैव्या, हेमवती, जांवती को कृष्ण के शव के साथ जला दिया गया था (मौसल पर्व 7/73–74)

© 2016 Vidya Publications. **Authors are responsible for any plagiarism issues.**

jkepfj= ekul dkyh u lkfgR; e ukjh dh fLFkfr&

'रामचरित मानस के कवि तुलसीदास तो ऐसा लगता है। वे स्त्रियों से सबसे ज्यादा खट्आ खाए बैठे हैं। बाल्मीकि ने दशरथ पुत्र राम को जहां मर्यादा पुरूषोत्तम के रूप में चित्रित किया है। वहीं तुलसीदास ने उनमें अलौकिकता का संचार करके मर्यादा पुरूषोत्तम के स्थान पर से अलौकिक शक्ति सम्पन्न ईश्वरत्व से परिपूर्ण बना दिया। इसका तात्पर्य तो ये ही हुआ। राम के जन्म से पहले कोई ईश्वर नहीं था। उनके द्वारा अनेक विपरीत व्याख्यान नारियों की उपेक्षा में दिए है–

1. ढोल गंवार शूद्र पशु नारी, ये सब ताड़न के अधिकारी (राम चरित मानस)
2. अब मोहि आपनि किंकरिजानी, जदपि सहज जड नारि अयानी (बाल काण्ड 143/2)
3. विधिहुन नारि ह्रदय गति जानी, सकल कपट अध अवगुण खानी (अयोध्याकाण्ड 162/2)
4. नारि सुभाउ सत्य सब कहहीं, अवगुण आठ सदा उर रहही। साहस, अनृत, चपलता माया, भय अविवेक, अशौच, अदाया– (राम चरित मानस)
5. भ्राता–पिता, पुत्र उरगारी, पुरूष मनोहर निरखत नारी।। होई निकल सक मनहिन रोकी, जिमिरवि मानद्रव रविहि विलोकी (अरष्य कांड– 28/4)
6. सती ह्रदय अनुमान किए, सब जानेउ सर्वज्ञा कीन्ह कपटु मैं सम्भु संग, नारि सहज जड अज्ञ (बाल काण्ड–80)
7. अधम ते अधम, अधम अति नारी (अरष्य काण्ड 62–1,2)
8. सहज अपावनि नारि, पति सेवत शुभगति लहै (अख्य काण्ड–9) **(25)**

अर्थात–

1. ढोल, गंवार, शूद्र, पशु और नारी ये सब इन सबको दण्ड मिलते रहना चाहिए। बिना प्रताड़ना के उनकी कुछ समझ नहीं आता।
2. अब मैं वास्तविकता को समझ गया हूँ। स्त्रियां सबसे अधिक मूर्ख होती हैं। वे संवेदन शून्य और घूर्त होती हैं–
3. ब्रह्मा भी नारी के ह्रदय की गति को नहीं जान सकता। वह सर्वाधिक नींच और अवगुणों की खान होती है।
4. नारी के स्वभाव के विषय में लोग ठीक ही कहते हैं। दुस्साहस, झूठ, अस्थिरता, माया, डर, अज्ञान, अपवित्रता, अनुदारता ये आठ अवगुण हमेशा उसमें रहते हैं।।
5. चाहे भाई हो, पिता हो, पुत्र हो अथवा अन्य हो नारी हमेशा सुन्दर पुरूषों को पंसद करती है। वह चन्द्रकान्तमणी की भांति उन्हें देख पिघलती है। अपने को रोक नहीं पाती है।
6. सती ने अपने जी में अनुमान किया। सर्वज्ञ शिव ने सब जान लिया। मैंने शिव से कपट किया। स्त्रियां स्वभाव से मूर्ख और ना समझ होती हैं।।
7. स्त्रियां नीचों से नीचे सर्वाधिक नींच होती है।
8. नारी स्वभाव से ही अपवित्र होती है। वह पति की सेवा करके ही परम पद को प्राप्त कर सकती है।

तुलसीदास ने पूर्ववर्ती तथाकथित धार्मिक ग्रंथों में वर्णित कुरीतियों, अमान्य मान्यताओं, असमानताएं, दुर्व्यवहार, जीर्णताओं, अनुचित और अनुपयुक्तताओं को असली जामा पहनाकर धर्म भीरूओं के बीच यश बटोरने का कार्य किया है। एक वर्ग विशेष का अपनी कृति के द्वारा पालन–पोषण का सार्थक प्रयास किया है। जिसमें उनके द्वारा इच्छानुकूल सफलता प्राप्त की है। स्त्रियों को जितना नीचा तुलसी ने समझा उतना किसी अन्य काल के किसी अन्य रचनाकार ने नहीं समझा। इसके बाद भी वे लोगों के सिर चढ़कर बोलते हैं। यह एक विडम्वना ही है। दण्ड का भागी यश भोग रहा है।

© 2016 Vidya Publications. **Authors are responsible for any plagiarism issues.**

"जिन्दगी फूलों का रास्ता नहीं है, एक बड़ी लड़ाई है। सब तरफ जो लोग हैं, उस ढांचे से बचने की लड़ाई है जिन्दगी" **(26)**

सन् 1829 में ब्रिटिश सरकार ने एक कानून बनाकर सती प्रथा को भारत से समाप्त कर दिया। इससे स्त्रियों के साथ होने वाले जधन्य अपराधो में अंशतः कुछ न्यूनता आयी। उसके पश्चात राजा राम मोहन राय और ईश्वरचन्द विद्यासागर जैसे समाज सुधारकों ने अपने प्रयासों से विधवा विवाह को एक कानून बनाकर प्रोत्साहन दिया जिससे विधवाएं घृणित के स्थान पर कुछ मान्य मानी जाने लगी। साथ ही वेमेल विवाह और बाल विवाह पर भी प्रतिबन्ध लगा। दस वर्ष की कन्या को तीस चालीस वर्ष के व्यक्ति के साथ सौपने की व्यवस्था को लगाम लगी। यह आम धारण टूटी की पति की मृत्यु स्त्री के पूर्व जन्म के कारण होती है। ब्रहम समाज और आर्य समाज जैसी समाज सुधार की अन्य अनेक संस्थाओं ने इसमें सहयोग किया। इन सुधारों से मनु स्मृमि की अनेक स्त्री विरोधी प्रथाएं रखी की रखी रह गयीं।

fgUnh lkfgR; e ukjh dh fLFkfr&

भारत की कुल जनसंख्या की स्थिति में हिन्दी भाषी जनसंख्या का प्रतिशत चालीस प्रतिशत है। इसके सांसद भी संसद में चालीस प्रतिशत के लगभग ही हैं। लेकिन केन्द्रिय व सेना की सेवा के उच्च पदों में इनका प्रतिशत मात्र तीन प्रतिशत है। इनका प्रतिशत सभी सेवाओं में चालीस प्रतिशत होना चाहिए था। लेकिन उनके पिछड़ेपन का मुख्य कारण है उनका आलसी, संतोषी और अनुत्साही होना। आधुनिक ज्ञान विज्ञान उद्योग, व्यवसाय सेना, प्रशासन, समाज, राजनीति, कला संस्कृति, साहित्य आदि क्षेत्रों में भी उनकी उपलब्धियां जनसंख्या के अनुरूप नहीं है। फिर पिछड़े पुरूषों में स्त्रियों की स्थिति कैसी होगी यह अत्यन्त विचारणीय प्रश्न है। इस देश की दूसरी भाषा के भाषियों पुरूषों और महिलाओं ने जितनी उन्नति जीवन के हर क्षेत्र में की इतनी हिन्दी भाषियों ने नहीं की।

आदि से अन्त तक अध्ययन करने के पश्चात आप पायेगे कि हिन्दी साहित्य में कुछ ऐसा हो जो समस्यायों के निदान के लिए बड़े स्तर पर कोई आन्दोलन चलाकर नारी पर होने वाले अत्याचारों मानवीय अपमानों और दुर्व्यवहारों के विरूद्ध अपनी आवाज़ उठाए एक वर्ग वर्ण और जाति विशेष के लोगों से सारे विभाग भरे हैं। वे जो पाठ्यक्रम निर्धारित करते हैं। उनमें प्राचीन मूल्य को प्राथमिकता दी जाती है। जिसने उस गिरती इमारत के विपरीत लिखा, सत्य, स्वाभाविक, समीचीन लिखा । उस रचनाकार के विरूद्ध सब मिलकर खडे हो जाते है। उन्हें परिवर्तन, प्रगति, यथार्थ मूल्य स्वीकार्य नहीं हैं। प्राचीन मूल्यों के पतन को लेकर वे चिन्तित हो जाते हैं। उनके पतन और विनाश के होते ही इनका भी तो पतन और विनाश हो जाएगा। इनकी चौदराहट, ठेकेदारी, एकाधिकार, सर्वोच्चता और नितान्त एकांगी प्रभु सत्ता समाप्त हो जाएगी।

ohjxkFkkdky ¼vkfndky½ के साहित्य के अध्ययन से स्पष्ट होता है। कि इसमें नारी को उपभोग की उपयोग की वस्तु माना गया है। उसका समाज के प्रति क्या त्याग है। समाज को बनाए रखने में उसकी तपस्या कितनी असीम है। उसके वलिदानों को इस काल में कहीं रेखांकित नहीं किया है। उसके मांसल शरीर अंगों प्रयागो का निषिद्ध चित्रण प्रस्तुत किया गया है। यह सिद्धों, नाथों, योगियों, चाटुकारों का काल कहा जाना चाहिए जिसमें प्राचीनग्रंथों की परम्पराओं को यथाशाक्ति बनाए रखने का प्रयास सम्पूर्ण निष्ठा से किया गया है। चापलूसी, चाटुकारिता इस काल की मुख्य विशेषता रही है। साधुओं, सिद्धों, सन्तों तथा कथित महात्माओं ने एक स्वर से नारी की निन्दा की है। अपनी कामपूर्ति हेतु उसके उपयोग की चर्चाएं की हैं। कवियों ओर लेखकों ने चाटुकारिता में कीर्तिमान स्थापित किए। स्वेच्छाचारी निरंकुश उदन्ड राजाओं की शौतानियों को वीरता का नाम दे कर उनका उत्साहवर्धन किया है। जैन और बौद्ध जैसे धर्मों में भी टूट–फूट इस काल में हुई। उसकी अनेक शाखाएं उपशाखाएं बन गयी। चन्द्रवरदायी, जगनिक, खुमान जैसे अनेक रचनाकारों ने रासो परम्परा के परिप्रेक्ष्य में अनेक रचनाओं का

© 2016 Vidya Publications. **Authors are responsible for any plagiarism issues.**

सृजन किया। जिनमें अधिकांश युद्धों का, झूठी प्रशंसाओं का वर्णन है। जिनसे न साहित्य को दिशा मिली और न समाज को कुछ लाभ हुआ हॉ स्त्रियों के स्वामित्व को क्षति अवश्य हुई।

HkfDr dky&

इस काल में भक्त कवियों का हारा हुआ चित्र और चरित्र सामने आता है। जीत के बाद हार ही आती है साहित्य में भी ऐसा ही हुआ। भक्तिकाल के विषय में आचार्य रामचन्द्र शुक्ल जैसे परम्परावादी साहित्यकार ने लिखा है "अपने पौरूष से हताश जाति के लिए भगवान की शक्ति और करूणा की ओर ध्यान ले जाने के अतिरिक्त दूसरा मार्ग ही नहीं था" भक्तिकाल की उपज हारी हुई मनोवृतियों की उपज थी। "मनोवैज्ञानिक तथ्य के अनुसार हाथ की मनोवृति में दो बाते सम्भव हैं। या तो अपनी आध्यात्मिक श्रेष्ठता दिखाना या भोग विलास में पड़कर हार को भूल जाना भक्तिकाल के लोगों में प्रथम प्रकार की प्रवृति पाई जाती है" **(28)** कबीर, तुलसी, नानक, सूर, कबीर, जायसी आदि ने अपने को परम के हवाले कर दिया। भगवद्शक्ति, उत्तरदायित्व हीनता, नामस्मरण, भाग्यवाद पुनर्जन्म, परलोक सुख, निराशवाद आदि सत्यानाशी चिन्तन के अतिरिक्त किसी आशाबाद का संचार नहीं किया। ये कवि जीवन को जीने की जीवटता और जिजीविषा देने में असमर्थ रहे। याचक, निवेदक, प्रार्थी, घुटने टेकने वाले और समर्पण करने वाले रहे। जांति–पाँति को तोड़ने के प्रयास भी आन्दोलन के सतही रूप में हुए कबीर, रविदास, नानक देव इत्यादि ने अपने सृजन में इसको स्थान दिया।

jhfr dky&

भक्तिकाल के पश्चात रीतिकाल का आगमन होता है। रीतिकाल के कवियों ने नारी के अर्न्तमन की पीड़ाओं में झांकने की फुरसत नहीं मिली वे उसके अर्न्तमन में झॉकने का असफल प्रयास अवश्य करते रहें। उसकी शरीर के मांसल सौन्दर्य को तो उनके द्वारा देखा गया उसका वर्णन भी किया लेकिन उसके अपमान, निरादर, शोषण, उत्पीड़न को समाप्त करने का कोई रास्ता उनके द्वारा नहीं सुझाया गया। बिहारी, केशवदास, घनानन्द, रसखान, पदमाकर इत्यादि अनेक साहित्यकार ऐसे थे जो राज्याश्रित थे जो अपने को सत्ता का साथ साध कर चलते थे उनकी आजीविका सत्ता के आधीन थी। वे सत्य कहने का साहस जुटा कर भूखे मरने का जोखिम लेने की स्थिति में नहीं थे। इस काल में क्षोभाजनक उवाऊ प्रवृतियां और पुनरावृतियां खिन्न करती हैं। इसके बाद भारतेन्दु युग, द्विवेदी युग, छायावादी युग, प्रगतिशील युग, प्रगतिवाद, प्रयोगवाद, अनेक विचार धाराएं आयीं और चली गयीं। उसके बाद, प्रसाद, पंत, महादेवी वर्मा ने अपनी–अपनी पीड़ा को जन मानस के समक्ष प्रस्तुत किया। स्त्रियों ने स्त्रियों के उद्धार का वीणा न उठाकर स्वानुभूत सृजन को प्राथमिकता दी।

vk/kfud ;qx vkj mldh /kkjk,&

हिन्दी भाषा विश्व की चार मुख्य भाषाओं में से एक है। इसके रचनाकारों से ऐसी अपेक्षा की जाती है, कि वे हिन्दी की हरेक विधा में कुछ ऐसा अभूतपूर्व सृजित करें जिससे सारे विश्व का पथ आलोकित हो सके। उस लिखे को सारा संसार जान ने को उत्सुक हो। वह उसकी दिनचर्या का अंग बने। वह उसके जीने की दशा और दिशा निर्धारित करें। वह संसार के वुद्धिजीवियों का मार्ग दर्शन करें। उसके लेखन से समस्यायें सुलझें उलझें नहीं। आधुनिक काल के कुछ उपन्यासकारों, कहानीकारों, निबन्धकारों ने नारी की समस्यायों को निर्द्वन्द्वभाव से उठाया है। कुछ कवियों ने भी उसके वेचारेपन को उठा फेंकने का यथाशक्ति प्रयास किया है। अधिकांश कवि एवं लेखक पिष्टम्–पिष्टेण करते रहे है। पुरानी बोतल में नए को परोसने का प्रयास करते दीखते हैं। सन् 1936 के बाद साहित्यिक अभिरूचियों में अन्तर आया है। फिर भी दिखावा अधिक देखने मिलता है। सन ,1950 के पश्चात स्त्रियों की दशा में विशेष परिवर्तन लाने का प्रयास भारतीय संविधान ने किया है। उसके निर्माता ने स्पष्ट लिखा है– "हर स्त्री और पुरूष को शास्त्रों की दासता से मुक्त करों। शास्त्रों की घातक शिक्षाओं से दूषित मनो को साफ करों। वे स्वमेव बिना किसी के कहे, अन्तर्भोज और अन्तर्विवाह करने लगेंगे। तुम्हें वह दृष्टिकोण अपनाना

© 2016 Vidya Publications. **Authors are responsible for any plagiarism issues.**

चाहिए जो बुद्ध ने अपनाया। तुम्हें वह दृष्टिकोण अपनाना चाहिए जो गुरूनानक ने अपनाया हिन्दुओं को यह बताने की जरूरत है कि गलती उनके धर्म में है। जिसने जाति को पवित्र मानने के विचार लोगों के दिमागों में भरे हैं" **(29)** डा0 अम्बेडकर ने एक लम्बा संघर्ष समाज की अमावीय व्यवस्था को बदलने के लिए किया था। विशेश रूप से सारे भारत की सारी नारियों की मुक्ति की लड़ाई एक पुरोधा ने लड़ी। उनको संवैधानिक अधिकार देकर सारे अन्यायों, अत्याचारों, शोषणों और उत्पीड़नों से मुक्त कर दिया। स्त्रियों का उनसे बड़ा हितैषी उद्धारक, मार्गदर्शक उनके सिवा भारत में कोई दूसरा नहीं हुआ।

fu'd'k&

अपने इस शोध पत्र के माध्यम से मेरे द्वारा वैदिक काल से वर्तमान समय तक के साहित्य में नारी के विषय में विभिन्न विद्याओं के रचनाकारों, धार्मिकों शासकों, अवतारों, पुरोहितों, नीति निर्माताओं, उसके नियंताओं, धर्म के प्रचारकों, प्रसारकों, विस्तारकों की, क्या नीति और निगत रही है। उसकी एक झलक को प्रस्तुत करना है। विस्तार से चर्चा की जाती, तो यह पत्र पुस्तक का रूप ले लेता जो शोध पत्र की सीमाओं का अतिक्रमण हो जाता। इस तथ्य का पूरी सावधानी से पालन किया गया है कि इस अत्याधिक विस्तृत विषय के बाद भी मेरी दृष्टि नारी विषयक बिन्दुओं को उजागर करने की रही है। अत्यन्त विनीत भाव से नारी को बीच में रख रची गयी मानसिकता की रचना का विश्लेषण करना मेरा उददेश्य हैं। इसमें भारतीय संविधान की एकता, अखण्डता, सम्प्रभुता, सर्वोच्च गरिमा का पूरा ध्यान रख उसको बनाए रखने का प्रयास पूरी निष्ठा के किया गया है। साथ ही उसकी धारा 295 ए का पूरी जीवन्तता से पालन किया है–

भारतीय समाज अपने चिन्तन मनन का आदि स्रोत वेद को मानता है। उसकी व्यवस्थाओं के अनुसार नारी एक संवेदनशील प्राणी न होकर एक वस्तु है। एक सामान है। जिसका उपयोग किसी रूप में भी किया जा सकता है। उसे उपहार में किसी को भी दिया जा सकता है। इसमें आर्यों की नीतिओं रीतिओं का वखान है। अलग–अलग समष्टि के अंगों से तथा देवताओं से प्रार्थनाएं की गयी हैं। यह नारी को लेकर लेषमात्र भी उदार नहीं है। पुरूष की प्रधानता इसमें सर्वोपरी है। इसमें मांस के सेवन के आदेश हैं। यदि वेद का कोई शब्द इनके कान में पड़ जाय तो उसमें पिछला कर शीशा भर देना चाहिए। नारी को कोए ओर कुत्ते की श्रेणी में रखा गया है। उसका ह्रदय लकड़वग्धो (जंगली जानवर) से भी अधिक कठोर बताया गया है। वह मैत्री के सर्वथा अयोग्य है। इसमें सती प्रथा, नियोग, व्यभिचार, सेविका, दासी, वेजुवान पशु की भांति समझा गया है। उसे पूर्णतया संवेदनहीन वस्तु के रूप में चित्रित किया है। जिसके प्रसार की जड़े आज भी भारतीय नारी को दूसरे दर्जे का नागरिक मानती हैं। वैदिकों की दृष्टि में वह आज भी दीन–हीन, वेजुवान, वेचारी है। अकर्मण्यों, कुटिलों, कायरों की दृष्टि में वह आज भी एक प्राणी न होकर बेकार की वस्तु हैं। जिस समाज की जड़ें नारी के प्रति इतनी घृणा, विद्वेष, निरंकुशता और स्वच्छन्दाचरण से भरी हो उसका वृक्ष कैसा होगा, उस पर आने वाले पत्ते, फूल, फल कैसे होगे उनको आप प्रतिदिन संचार माध्यमों और समाचार पत्रों के माध्यम से पढ़ और देख रहे हैं। आज जितनी भी क्रूरताएं, जघन्यताएं, निममताएं, अनाचार, दुर्व्यवहार, अमानवीयता नारी के साथ हो रहीं हैं, उनकी आदि स्रोत, पालक पोषक और संरक्षक वैदिक संस्कृति है। सारी व्यवस्थाएं पुरूषों के द्वारा दी गयीं। अन्धा बांटे रेवडी घुम फिर अपने को देय। समाज में नारी की जो दुर्गति, उसे देखने का नजरिया, पुरूष समाज के सारे दोहरे मानदण्ड, उसकी नारी के प्रति कुटिलता, क्रूरता, निरादर, अपमान, संशय की प्रवृति इत्यादि अनेकानेक जघन्यताएं वेद प्रसूत ही तो हैं। अमर्यादित आचरण, अनैतिक व्यवहार, असमान सोच, नारी को लाकर यहां खड़ा कर देता हैं कि वह यह सोचने को वाध्य हो जाय कि आखिर वह नारी है क्यों, उसके लिए व्यवस्थाएं वैदिक काल में इतनी कड़ीकर दी गयीं, जिससे वह अपने को हमेशा शूली पर चढ़ा महसूस करे। पहले तो उसको धरती पर न आने देने के अधिकाधिक प्रयास किए गए, गर्भ से उसे पुरूष वर्ग से संघर्ष करना पड़ा। उसे हरा कर पीछे छोड़कर आगे आ अपने को आकार देने वाध्य होना पड़ा। घर में आने के बाद जहां पुत्र होने पर खुशियां ढोल–नगाड़े बजवाए गए इसके आने पर माथा

© 2016 Vidya Publications. **Authors are responsible for any plagiarism issues.**

पीटा गया। शोक जताया गया। उल्टा तबा बजाया गया। उसके बाद भी यदि ये बच गयी तो लड़कों से हमेशा कमतर समझा गया। उसे हर स्तर से ये सोचने वाध्य किया गया। ये पराए घर का कूड़ा है। किसी दूसरे की अमानत है। अपनी हीन भावना उस पर थोप कर उसे भी हीन बनाया गया। लेकिन वह कुछ न बोली समाज के साथ रहती रही, सब कुद सहती रही, उसने सब सहा, मुह न खोला कुछ न बोला। उसने घर और बाहर सबकी आवाज सुनी आदेशों का पालन किया। लेकिन उसकी किसी ने न सुनी। आदेश तो दूर उसके यथार्थ निवेदनों को भी ठुकरा दिया गया। यह चाहे परिवार के द्वारा हुआ हो, अथवा समाज के द्वारा हुआ हो। लेकिन हुआ अवश्य, उसे कभी अपेक्षा की दृष्टि से नहीं देखा गया। हमेशा उपेक्षित जान उपेक्षा की दृष्टि से देखा गया। पुरूष समाज जब जैसा चाहे तब उसके साथ वैसा व्यवहार करता रहा। शास्त्रों ने अपनी अपेक्षाओं को पूरा करने उसे पूजा की वस्तु लिखकर कागजों को तो काला किया। व्यवहार हमेशा उसके साथ अमानुषीय और घृणास्पद किया। इस सारी असैद्धान्तिकता का मूलाधार वेद और वेदोत्तर धार्मिक और सामाजिक ग्रंथ हैं। पुराण, स्मृति कुछ घटा–बढ़ाकर उन्हीं मूल्यों को परोक्ष अथवा प्रत्यक्ष ढो रहा है। जो वेद ने स्थार्पित किए हैं। सारे सृजको ने वेद को हौआ बना रखा है। उससे हटकर उससे कटकर लिखने का आज भी कोई साहस नहीं जुटा पा रहा है। वे वेद की वैशाखियों के बिना एक कदम भी चलने को तैयार नहीं है। आखिर क्यों?

नारी अपनी बेड़ियों और हथकडियों को काटने आज भी क्यों तैयार नहीं है। वह सहमी, डरी, घबराई, विषादयुक्त और तनाव भरी क्यों है? वह अपने ऊपर परोक्ष भय को लादकर क्यों जी रही? वह उस साहित्य में आग लगाने की तैयार क्यों नहीं है जिसने उसे पशुओं की श्रेणी में रखा है? वह उस समाज से उम्मीदे वफा क्यों करती है जिसने उसे युगों से डराया, धमकाया, शोषण, उत्पीड़न, प्रतारण किया? वह आजादी के सड़सठ साल बाद भी अपने स्वतंत्र अस्तित्व की घोषणा करने को तैयार क्यों नहीं है? आज तक अपनी करूण कहानी को अनुनयों, विनयों, प्रार्थनाओं के द्वारा उसने किस देवी, किस देवता, किस अवतार को न सुनायी? लेकिन कोई सार्थक परिणाम पिछले साड़े पांच हजार वर्षों में सामने नहीं आया। पूजा करती रही, उपासना करती रही, उपवास रखती रहीं, लोगों के पैरो से कुचली जाती रही, उनकी दुर्भावनाओं और दुराचरणों का शिकार होती रही। आखिर कब तक। इसकी कोई हद, कोई सीमा, कोई किनारा कभी होगा या नहीं। हजारों पीढियां बीत गयीं। संघर्ष, संघर्ष और संघर्ष। ये है जोकि खत्म होने का नाम ही नहीं लेता। हर अवस्था में, हर स्थिति में, हर मोड़ पर वह अपने को सुरक्षित महसूस क्यों नहीं करती? परोक्ष आक्रमंण, आतंक, अपरिहार्यता और आकस्मिकता के कांटे उसके सीने में क्यों चुभते हैं?

कारण है। जिन ग्रथों की विचारधारा ने उसको इस दोराहे पर जीने और मरने के बीच खड़ा किया है। वह उनका पारायण करती है। जिनको जलाना था, उनको पूजती है। जिनके द्वारा उसके जीवन पथ में कदम–कदम पर अंगारे विछाए उनके गुणों का गान करती है। आरती उतारती है। उनके नाम का उपवास करती है। जिनको लातों से मारना चाहिए था उनकी लातों पर अपना माथा टेककर फूल चढाती है। जिन पैरो ने उसे सदियों से कुचला, दीन, हीन, दासी, भोग्या बनाया उनको तोड़ती नहीं उनके हाथ जोड़ती है। उसको आज भी एक षड्यंत्र के अनुसार डराया, भरमाया और बस में लाया जा रहा है। विभिन्न काल्पनिक कथाओं के द्वारा, भविष्य में फल प्राप्त होगा के द्वारा उसके मूल चिन्तन, विचारधारा को आज भी हिलाया–डुलाया, विचलित किया जा रहा है। उसकी भाबुक भावना का विभिन्न मतों और सम्प्रदायों के साधु, सन्त, महात्मा, पुरोहित, पुजारी, मुनि, ज्ञानी, भिक्षुक, सन्यासी इत्यादि आज भी भ्रमित कर अपने चंगुल से निकलने नहीं दे रहे हैं। आए दिन भारत के किसी ने किसी कौने में किसी न किसी सन्त का भण्डाफोड़ हो रहा है। फिर भी ये 'रूण्ण्णताओं, अमान्य मान्यताओं, रीति रिवाजों, परम्पराओं, अशिक्षाओं, अज्ञानों का शिकार बनायी जा रहीं हैं। उनकी दुराग्रह से युक्त मानसिकता उसका शिकार कर रहीं है। शिक्षा से दूर रखना सबसे बड़ा षड्यंत्र था। शिक्षा से दूर, सेवा से दूर, उत्पादन से दूर अर्जन से दूर, स्वावलम्बी

© 2016 Vidya Publications. **Authors are responsible for any plagiarism issues.**

होने से दूर, अपने पैरों पर खड़े होने से दूर, स्वाभिमानी होने से दूर, अपने अस्तित्व को स्थापित करने से दूर, समाज की मुख्यधारा में जीने से दूर कब तक दूर रहोगी? इस दूर की दूरी भी तो हमको ही मिटानी है। हम खुली आँखों षड्यंत्रकारी व्यवस्थाओं को समझे, जाने, सोचे, समझाएं। जो कुछ हमारे जीवन को जीवित रखने के विपरीत है। उस लवादे को अंगीकार, स्वीकार आत्मसात न करें। उसे उतार फेंके, जिसने हमें दूसरे दर्जे का समझा हमारा शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, वौद्धिक, शोषण किया। वह चाहे कोई देवी हो, देवता हो, महापुरूष हो, अवतार हो अथवा असमानता की विचारधारा से भरा कोई भी महानतम धार्मिक ग्रंथ ही क्यों न हो उसे त्यागे। हम मुकरेगे जग मुकरेगा। हम सुधरेगे जग सुधरेगा। अब समय आ गया है, असमानता दूर करने का जो उत्पाद उसके उत्पादक को बलपूर्वक जलाए, अपमानित करे, उत्पीड़न करे, पशुओ जैसा व्यवहार करे, उसे निष्प्राण, संवेदहीन समझे उसके ढांचे को बदलने का, उसे सचेत कर होश में अपनी सीमाओं में रहने लंलकारने का, पुरोहितों, पातकियों, पाखण्डियों, धार्मिको, को ये बतलाने का है।

आदि, मध्य, अन्त पर अब, दृष्टि डाली जाएगी। हसरतों की अब नहीं, अर्थी निकाली जाएगी।।
हम भी हैं इन्सान, रखना याद इसे। देगे उत्तर अब नहीं, गरदन झुकाली जाएगी।।

सन्दर्भ सूची-:

1. मुक्तकांजलि – पृष्ठ–64 पंचशील प्रकाशन रामपुर उ0प्र0 ले0डॉ0 सी0एल0 चंचल
2. अथर्वेद' (6/11/13)
3. अथर्वेद– (8–6–25)
4. ऋग्वेद– 8–33–17
5. ऋग्वेद' 10–95–15
6. यजुर्वेद– 6–5–8–2
7. ऋग्वेद– 6–5–8–2
8. नारी और क्रान्ति– प्रो0 रजनीश चन्द्र मोहन पृष्ठ–प्राक्कथन–हिन्द पाकेट बुक्स– दिल्ली
9. गरूण पुराण– अध्याय दस– 10/36–40
10. गरूण पुराण– अध्याय दस– 10/42–43–45
11. गरूण पुराण– अध्याय दस– 10/48–19, 52–53
12. पाराशर स्मृति– अ–4 ब्रहम पुराण एवं गौतभी माहात्म्य– 10/76–74/दक्ष स्मृति–4/18–19, गुरूण पुराण–10/51
13. वृद्धहारीत स्मृति– 11/199–202
14. याज्ञवल्क्य स्मृति– 1/86 पर मिताक्षरा टीका, मदन पारिजात पृष्ठ– 186
15. नारी और क्रान्ति– प्रो0 रजनीश चन्द्र मोहन पृष्ठ–87, हिन्द पाकेट बुक्स–दिल्ली
16. वृहदारण्यक उपनिषद– 6/4/7
17. वृहदारण्यक उपनिषद– 4/5/1
18. बाल्मीकि रामायण– अयोध्या कांड– 66/12
19. बाल्मीकि रामायण– युद्ध काण्ड– 32/32
20. बाल्मीकि रामायण– उत्तर काण्ड– 17/14
21. तुलसी रामचरित मानस– अरण्य काण्ड्
22. नारी और क्रान्ति– प्रो0 रजनीश चन्द्र मोहन– पृष्ठ–प्राक्कथन

© 2016 Vidya Publications. **Authors are responsible for any plagiarism issues.**

23. महाभारत– आदि पर्व– अध्याय– 104
24. महाभारत– आदिपर्व– अध्याय– 105
25. रामचरित मानस– गोस्वामी तुलसी दास की कृति के आठ अंश
26. नारी और क्रान्ति– प्रो0 रजनीश चन्द्र मोहन– पृष्ठ– 68
27. हिन्दी साहित्य का इतिहास– रामचन्द्र शुक्ल– पृष्ठ– 63
28. बाबूगुलाब राय– भक्तिकाल का इतिहास
29. राईटिग्स एंड स्पीचिज–जिल्द–1 पृष्ठ 74–75, और 68–69 शिक्षा विभाग महाराष्ट्र सरकार–1979 ले0– लाला साहेब– डॉ0 अम्बेडकर

© 2016 Vidya Publications. **Authors are responsible for any plagiarism issues.**